Indian J. Soc. & Pol. 12 (02):99-102: 2025 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 JULY 2025 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में भारत की सामुद्रिक सुरक्षा रणनीति

ज्योति सिंह यादव[1], नीलम गुप्ता[2]

[1]शोध छात्रा, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उ0प्र0, भारत
[2]प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

हिन्द प्रशांत क्षेत्र में भारत की सामुद्रिक सुरक्षा रणनीति एक व्यापक और बहुआयामी दृष्टिकोण पर आधारित है, जो क्षेत्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास, और भू–राजनीतिक स्थिरता को बढ़ावा देने के स्थापित की गई है। यह रणनीति भारत के भू–राजनीतिक हितों, समुद्री सुरक्षा, और क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने पर केंद्रित है। क्योंकि हिन्द–प्रशांत क्षेत्र हिन्द महासागर और प्रशांत महासागर के मध्य एक भू–राजनीतिक क्षेत्र है, जो वैश्विक व्यापार,ऊर्जा आपूर्ति और सामरिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। भारत अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण हिन्द महासागर मे एक केन्द्रीय भूमिका निभाता है यह क्षेत्र वैश्विक समुद्री व्यापार मार्गों का केंद्र है, जिसके कारण इसकी सुरक्षा अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत की सामुद्रिक रणनीति 'सागर' नीति पर आधारित है,जो क्षेत्र में सभी देशों के लिए सुरक्षा और समृद्धि को बढ़ावा देती है। भारत इस क्षेत्र में सामुद्रिक रणनीति के माध्यम से समुद्री आतंकवाद,समुद्री डकैती,और अवैध गतिविधियों से निपटना, मुक्त और खुले हिन्द प्रशांत में नियम–आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था का समर्थन करना तथा क्षेत्रीय सहयोग के लिए क्वाड और अन्य बहुपक्षीय मंचों का उपयोग करना है।

KEYWORDS: *सामुद्रिक सुरक्षा, हिन्द–प्रशांत क्षेत्र, सामुद्रिक रणनीति, क्षेत्रीय सहयोग, शांति, समुद्री व्यापार, स्वायतता।*

प्रस्तावना

21वीं शताब्दी में किसी भी देश की सामुद्रिक सुरक्षा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की नवीनतम अवधारणा है। विश्व मे शीत युद्ध समाप्ति के बाद दुनिया के समस्त द्वीपों और महाद्वीपों में स्थिति राष्ट्रों के बीच अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक संबंधों का विस्तार होने लगा। जिससे सामुद्रिक रणनीति की अवधारणा सामने आयी। वर्तमान युग वैश्वीकरण का युग है जिसकी शुरुआत समुद्री व्यापार के महत्व से हुई है। समुद्री व्यापार से समुद्री सुरक्षा, समुद्री शक्ति, नीली अर्थव्यवस्था और लचीलापन आदि शब्द का महत्व बढ़ गया। वर्तमान समय में समुद्री परिवहन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वैश्विक अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। विश्व का लगभग 70 से 80 प्रतिशत व्यापार समुद्री मार्गों से होता है, जिसके कारण विश्व समुदाय में समुद्री सुरक्षा एक महत्वपूर्ण मुद्दा बना हुआ है, क्योंकि समुद्री डकैती,अवैध अप्रवास, आतंकवादी हमले और हथियारों की तस्करी जैसे मानवता विरोधी कार्य हो रहे है जिससे विश्व की अर्थव्यवस्था प्रभावित हो रही है तथा इसके साथ ही राष्ट्रों की सीमा सुरक्षा चिंताएं भी बढ़ती जा रहीं है। वर्तमान समय में दुनिया भर के स्टॉक होल्डर द्वारा समुद्र की सुरक्षा और उन पर निस्तारण के प्रयास के कारण हिन्द–प्रशांत क्षेत्र अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में रुचि का विषय बना हुआ है।

समुद्री सुरक्षा का अर्थ

वर्तमान समय में समुद्री सुरक्षा एक महत्वपूर्ण मुद्दा बना हुआ है। समुद्री सुरक्षा वैश्विक संबंधों में एक नवीन अवधारणा है जिसको उन सभी मुद्दों को शामिल किया गया है जो समुद्र से संबंधित उन सभी उपायों, गतिविधियों और नीतियों से है। जो समुद्र क्षेत्रों की सुरक्षा, संरक्षण और संचालन सुनिश्चित करती है। इसका उद्देश्य समुद्र में किसी भी प्रकार के खतरों, जैसे सामुद्रिक डकैती, आतंकवाद, अवैध मछली पकड़ना, पर्यावरणीय क्षति, मानव तस्करी और सीमा– विवाद को रोकना है। यह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समुद्री व्यापार, संचार और प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपनाई जाती है। समुद्री सुरक्षा के अंतर्गत न केवल दुनिया के बड़े महासागरों की सुरक्षा नहीं आती बल्कि इसमें क्षेत्रीय समुद्र, नदियाँ, तथा बंदरगाहों की सुरक्षा भी शामिल है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामुद्रिक सुरक्षा एक नया शब्द है जिसकी अपनी कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है जिसके कारण विश्व के समस्त राष्ट्र अपने हितों एवं आवश्यकता के अनुसार अर्थ निकलते है। भारत की भी इसी प्रकार की स्थिति है क्योंकि भारत मे भी अभी तक कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। ऐसी स्थिति में भारतीय नौसेना ने 'भारतीय समुद्री सिद्धांत' नामक दस्तावेज में समुद्री सुरक्षा को परिभाषित करने की कोशिश की है। इसमे कहा गया है कि "समुद्र पर या उससे होने वाले खतरों से मुक्ति के प्रयास को ही समुद्री सुरक्षा कहा जाता है।" समुद्री सुरक्षा के लिए एक सामान्य ढांचे और सर्वमान्य परिभाषा के अभाव में अक्सर उन सभी प्रयासों और उपायों का विरोध होने लगता है जो किसी मंत्रालय या सुरक्षा एजेंसी के द्वारा सुरक्षा मानकों को अपनाए जाते है। फिर भी भारत में समुद्री सुरक्षा को समझने और उसको परिभाषित करने के भारतीय नौसेना द्वारा 'भारतीय समुद्री सिद्धांत' और 'सुरक्षित समुद्र सुनिश्चित करना' की नीति को आधिकारिक दस्तावेज माना गया है।

भारत में सामुद्रिक सुरक्षा का एतिहासिक परिपेक्ष्य

हिन्द प्रशांत क्षेत्र मे भारत की सामुद्रिक सुरक्षा का इतिहास बहुत प्राचीन रहा है। यह वेदों और पुराणों से होता हुआ इतिहास

1: Corresponding Author

की आधुनिक धार में मिल जाता है। पुराणों मे महासागर, समुद्र और नदियों से संबंधितनेक कहानियों और कथाओं का उल्लेख है। सिंधुघाटी सभ्यता के समय से ही भारतीय व्यापारिक जहाज समुद्र के माध्यम से व्यापार करते थे। भारत ने दक्षिण–पूर्व एशिया, मिस्र और रोमन साम्राज्य के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित किए थे। चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक ने नौ सेना का विस्तार कर व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित की। गुप्त साम्राज्य के दौरान समुद्री सुरक्षा क और बढ़ावा मिला। चोल साम्राज्य के दौरान भारतीय नौसेना ने दक्षिण–पूर्व एशिया और भारतीय महासागर में अपने प्रभाव को मजबूत किया। चोल राज्य राजेन्द्र चोल प्रथम ने समुद्री विजय अभियान चलाया और श्रीलंका, मलय द्वीप समूह और इंडोनेशिया तक अपने साम्राज्य का अंत किया। औपनिवेशिक काल में पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी, और अंततः ब्रिटिश नौसेनाओं ने भारतीय जल क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। इस दौरान भारतीय समुद्री शक्ति कम हो गई लेकिन स्वतंत्रता संग्राम के समय भारतीयों ने अपनी समुद्री सुरक्षा को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय नौसेना ने तेजी से विकास किया 1971 के (भारत–पाकिस्तान) युद्ध में भारतीय नौसेना ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और पाकिस्तान के कराची बंदरगाह पर हमले में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की।

भारत की सामुद्रिक सुरक्षा रणनीति इसकी एतिहासिक विरासत और भू–रणनीतिक आकांक्षाओं मे निहित है। 1946 के प्रारंभ मे ही इटिहसकर के एम पणिक्कर ने हिन्द महासागर मे शक्ति और सुरक्षा की जिम्मेदारी लेने के भारत महत्व पर जोर दिया था। अर्थात नौसेना की ताकत के बिना भारत की स्वतंत्रता का कोई मतलब नहीं होगा, जो आज भी प्रासंगिक है। सशीत युद्धकाल मे भारत की समुद्री रणनीति का महत्वपूर्ण चरण था क्योंकि इस समय देश ने स्वयं को महाशक्ति के सामने सोवियत संघ के साथ निकट आया। सोवियत–भारत के गठबंधन से क्षेत्रीय दृष्टि को सीमित कर दिया और भारत की एक संभावित क्षेत्रीय आधिपत्य वाली धरण बनाई जिसका मुकाबला उसने अपने पड़ोसियों के बीच स्थिरता और विश्वास को बढ़ावा देकर करने की कोशिस की। शीत युद्ध के बाद भारत ने अपनी एतिहासिक बाधाओं को समाप्त करना प्रारंभ किया आऊर अपने रणनीतिक दृष्टिकोण को बदलकर अधिक सक्रिय समुद्री नीति को अपनाया। जिसके परिणाम स्वरूप प्ट देशों के साथ संबंधों मे सुधार हुआ और एक जिम्मेदार क्षेत्रीय शक्ति के रूप में स्थापित हुआ। जैसे जैसे भारत का प्रभाव बढ़त गया वैसे वैसे नरम और कठोर शक्ति के मिश्रण के माध्यम से समुद्री क्षेत्र में स्थिरता, सुरक्षा और शांति सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता भी बढ़ती गई।

भारत और हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में समुद्री रणनीति

हिन्द–प्रशांत में भारत की समुद्री रणनीति एक व्यवस्थित रूप में विकसित हुई है जो कूटनीति, आर्थिक जुड़ाव और सैन्य क्षमता सहित राष्ट्रीय शक्ति के विभिन्न तत्वों को एकीकृत करती है। हिन्द–प्रशांत क्षेत्र मे भारत की सामुद्रिक रणनीति विभिन्न आयामों जैसे– सामरिक निवारण, समुद्री सुरक्षा और क्षेत्रीय सहयोग के इर्द–गिर्द तयार की गई।

सामरिक निवारण

सामरिक निवारण स्थापित करने में भारतीय नौसेना भारत की समुद्री रणनीति के लिए मौलिक कार्य है। भारत का उद्देश्य संभावित शत्रुओं को रोकने के लिए अपनी नौसेना का प्रदर्शन करना है। विशेष रूप से हिन्दप्रशांत क्षेत्र मे चीन के बढ़ते हस्तक्षेप के संदर्भ में। स्वदेशी विमान वाहक पोतों और पनडुब्बियों सहित उन्नत नौसैनिक परिसंपतियों का विकास एक प्रमुख समुद्री शक्ति बनने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मार्च 2024 में भारतीय नौसेना ने हिन्दप्रशांत क्षेत्र (IOR) मे समुद्री डकैती की घटना को सफलतापूर्वक किया और एक मछली पकड़ने वाले जहाज से 23 पाकिस्तानी नागरिकों को बचाया। जो क्षेत्रीय संकटों में प्रथम प्रतिक्रियाकर्ता के रूप में करने की भारत की क्षमता को दर्शाता है।

भारतीय नौसेना ने सेशेल्स और श्रीलंका के साथ मिलकर विभिन्न समुद्री डकैती घटनाओं में जहाजों को बचाने के मिशन भी शामिल हैं। इस बचाव प्रयास हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में क्षेत्रीय समुद्री सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। वर्ष 2022 में भारत ने अपने पहले स्वदेशी विमान वाहक पोत INS विक्रांत समुद्री रणनीति में मील का पत्थर साबित हुआ। भारतीय नौसेना में उन्नत पनडुब्बियों के लिए चल रही परियोजनाओं के साथ–साथ छः डीजल इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों के लिए रक्षा अधिग्रहण परिषद की मंजूरी भारत की अपनी पनि के नीचे की क्षमताओं को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करती है।

समुद्री सुरक्षा

भारत की समुद्री सुरक्षा के विभिन्न आयाम हैं जिसके माध्यम से भारत अपने सामुद्रिक क्षेत्र की सुरक्षा करता है। जिसमें समुद्री डकैती विरोधी अभियान, नौसैनिक वाहन की स्वतंत्रता और आतंकवाद तथा तस्करी जैसे गैर–पारंपरिक खतरों से निपटना शामिल है। जैसेकी मन जाता है की क्षेत्रीय अस्थिरता सीधे समुद्री सुरक्षा को प्रभावित करती है। इन आयामों ने भारत को अपनी समुद्री डोमेन जागरूकता और प्रतिक्रिया क्षमताओं को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। 2001 में भारत ने अंडमान निकोबार कमांड का गठन किया। यह कमांड मलक्का जलमार्ग 6 डिग्री चौनल तथा दक्षिणी चीन सागर के लिए बनाया गया था। अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलिया के साथ मलाबार नौसेना अभ्यास जैसे बहुपक्षीय अभ्यासों और साझेदारियों मे भारत की भागीदारी सामूहिक समुद्री सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। जो हिन्दप्रशांत क्षेत्र में नियम आधारित व्यवस्था के बनाए रखने के भारत के इरादे को सपस्ट संकेत देते हैं। इसी के साथ अभी हाल ही में भारतीय नौसेना ने सोमाली तट पर समुद्री डकैती का मुकाबला करने और अन्य समुद्री खतरों से निपटने के लिए सफलतापूर्वक अभियान चलाया है। जैसे कि मार्च 2024 में INS तलवार में ऑपरेशन क्रीमसन बाराकूड़ा के हिस्से से एक संदिग्ध को पकड़ा, जो नशीले पदार्थ की तस्करी और समुद्री अपराध से निपटने के लिए भारत के सक्रिय द्रष्टिकोण को दर्शाता है।

क्षेत्रीय सहयोग

भारत की सामुद्रिक रणनीति क्षेत्रीय सुरक्षा और विकास पर आधारित है। भारत हिन्द महासागर रिम (IOR) के देशों के मध्य समावशीय और सहयोग पर बल देती है। भारत क्षेत्रीय सहयोग के लिए (IORA) हिन्द महासागर रिम एसोशियन, हिन्द महासागर नौसेना संगोष्ठी (IONS), बहुक्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी की पहल (BIMSTEC) जाईसए विभिन्न ढांचों और खेतरिय संगठनों की स्थापना क्षेत्रीय जुड़ाव के लिए भारत की प्रतिबद्धता को बताता है। इसी के साथ क्वाड, आसियान के मंचों में भारत की भागीदारी क्षेत्रीय सामुद्रिक सुरक्षा और चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकना आदि भारत के सामुद्रिक रुख की ओर बदलाव को दर्शाता है।

भारत की सामुद्रिक विदेश नीति के प्रमुख स्तम्भ

सागर दृष्टिकोण

2015 मे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने "सेक्योरिटी एण्ड ग्रोथ फॉर आल इन द रीजन (AGAR) नीति की घोषणा की। यह दृ ष्टिकोण हिन्द महासागर क्षेत्र के देशों के साथ आर्थिक और सामरिक सहयोग पर आधारित है। जिसका उद्देश्य समुद्री सुरक्षा को सुनिश्चित करना, क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देना, समुद्री परिस्थतिकि का संरक्षण, अवैध गतिविधियों जैसे– समुद्री डकैती और मानव तस्करी का मुकाबला करना।

एक्ट ईस्ट पॉलिसी

1991 से चली आ रही लुक ईस्ट नीति को 2014 में भारत ने एक्ट ईस्ट नीति कर दिया। जिसके माध्यम से भारत का उद्देश्य दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के साथ व्यापार सुरक्षा और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करना है तथा आसियान देशों के साथ साझेदारी के तहत समुद्री सहयोग को प्राथमिकता देना।दक्षिण चीन सागर में स्वतंत्र नेविगेशन सुनिश्चित करना और विवादों का शांतिपूर्ण समाधान इस नीति का हिस्सा है।

क्वाड और बहुपक्षीय सहयोग

क्वाड (भारत, अमेरिका, जापान, आस्ट्रेलिया) हिन्द प्रशांत क्षेत्र में प्रमुख रणनीतिक पहल है जिसके माध्यम से भारत ने हिन्दप्रशांत क्षेत्र में एक सक्रिय भूमिका निभाती है। इसका उद्देश्य समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा देना, क्षेत्रीय स्थिरता और सहयोग को सुनिश्चित करना और लोकतान्त्रिक मूल्यों और स्वतंत्र नेविगेशन का संरक्षण करना है।

हिन्द प्रशांत रिम एसोशिएशन

भारत प्ट्। का संस्थापक सदस्य है। इसका उद्देश्य हिन्द प्रशांत क्षेत्रों के देशों के साथ आर्थिक और सामरिक सहयोग को बढ़ावा देना है तथा इस मंच का प्रमुख लक्ष्य समुद्री संसाधनों के स्वतंत्र विकास, व्यापार और समुद्री सुरक्षा में सहयोग करना है।

ब्लू इकोनोमी

भारत हिन्द प्रशांत क्षेत्र मे ब्लू इकोनोमी को बढ़ावा दे रहा है जो समुद्री संसाधनों के सतत उपयोग पर आधारित है। इसके अंतर्गत मत्स्य पालन और समुद्री जैव विविधता, समुद्री पर्यटन, अपतटीय ऊर्जा, समुद्री परिवहन और व्यापार शामिल है।

मुक्त और स्वतंत्र समुद्री मार्ग

भारत संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून का समर्थन करता है और हिन्द प्रसाहंत क्षेत्र मे समुद्री मार्गों की स्वतंत्रता को प्राथमिकता देता है। यह नीति दक्षिण चीन सागर मे चीन के बढ़ते प्रभाव का संतुलन बनाने में मदद करती है।

चुनौतियाँ

चीन की बढ़ती समुद्रिक उपस्थिति भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। चीन की जतपदह वचमंतसे रणनीति, जिसमें वह हिन्द महासागर क्षेत्र में बंदरगाह और नौसैनिक आधार बना रहा है (जैसे पाकिस्तान का ग्वादर, श्रीलंका का हम्बनटोटा) तथा दक्षिणी चीन सागर में अपनी आक्रामक नीति और नौसैनिक विस्तार से पूरे क्षेत्र में असंतुलन पैदा कर रहा है।

- हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में अन्य शक्तियों जैसे अमेरिका,जापान, आस्ट्रेलिया, फ्रांस, और यूके आदि का सक्रिय हो कर प्रतिस्पर्धा बढ़ना भारत के लिए अपने हितों की रक्षा करते हुए इन शक्तियों के साथ संतुलन स्थापित करना कठिन हो सकता है।

- हिन्द प्रशांत क्षेत्र मे हो रहे समुद्री डकैती, आतंकवाद और अवैध तस्करी भारत के समुद्री तट के लिए खतरा है क्योंकि भारत की कॉस्टल सिक्योरिटी प्रणाली की जगहों पर कमजोर है।

- भारत की प्रौद्योगिकी और नौसैनिक क्षमता तथा उन्नत तकनीकि चीन जैसी शक्तियों से अपेक्षा पीछे है।

- दक्षिण एशियाई और दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों के साथ भारत के रिश्तों का जटिल होना।

- भारत ने एक्ट ईस्ट और सागर नीति आदि की पहल की है। लेकिन भारत को एक समग्र और स्पष्ट सामुद्रिक रणनीति की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

हिन्द प्रशांत क्षेत्र आज के समय मे वैश्विक रणनीति, व्यापार, और सामुद्रिक सुरक्षा से अत्यंत महत्वपूर्ण बन गया है। भारत के लिए इस क्षेत्र में एक सशक्त सामुद्रिक रणनीति विकसित करना आवश्यक है। भारत हिन्द प्रशांत क्षेत्र को संज्ञान मे लेकर वर्तमान मे अपनी सामुद्रिक रणनीति को मजबूत किया है। भारत अब हिन्द प्रशांत क्षेत्र मे एक महत्वपूर्ण शक्ति है। भारतीय नौसेना ने आधुनिक तकनीकि और उपकरणों का उपयोग करके अपने सामुद्रिक वाहकों और पनडुब्बियों को आधुनिक बनाया है। इसके साथ ही भारत विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संधियों और समझौतों के माध्यम से हिन्द प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता और सुरक्षा को बढ़ाया है। भारत ने एक्ट ईस्ट नीति ,और सागर दृष्टिकोण, ब्लू इकोनोमी,कवाड जैसे नीतियों के माध्यम से अपने देश की सामुद्रिक सुरक्षा रणनीतिक हितों को मजबूत किया है। इसके साथ ही भारत को हिन्द प्रशांत क्षेत्र मे बढ़ती चुनौतियों

को भी संज्ञान मे रखना अत्यंत आवश्यक हो जाता है क्योंकि इस क्षेत्र मे चीन की बढ़ती सक्रियता भारत के हितों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। इसके लिए भारत का हिन्द प्रशांत क्षेत्र मे एक प्रभावी समुद्री रणनीति विकसित करना न केवल उसकी भू राजनीतिक स्थिति को सुदृढ़ करेगा बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन में उसकी भूमिका को महत्वपूर्ण बनाएगा। जिसके लिए भारत को रक्षा–सहयोग, नौसैनिक आधुनिकीकरण, समुद्री कानूनों का पालन, और कूटनीतिक संतुलन आवश्यक होगें।

REFERENCES

शरण, प्रो० हरी और प्रो० सिन्हा हर्ष कुमार (2022), *हिन्द प्रशांत क्षेत्र में भारतीय सामुद्रिक रणनीति* ,नई दिल्ली,राज पब्लिकेशन

दृष्टि आईएएस, (2022), *अंतर्राष्ट्रीय संबंध,* दिल्ली, दृष्टि पब्लिकेशन

यादव आर० एस०,(2022), *भारत की विदेश नीति,* नोएडा, पियर्सन

वर्ड फोकस , 2022

वर्ल्ड फोकस, मई 2025